सौवर्णशकटिका

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» महाकवि शूद्रक और 'मृच्छकटिकम्' का परिचय

प्रश्न 1 (आसान). महाकवि शूद्रक ने कौन सा प्रसिद्ध नाटक लिखा है?
उत्तर – 'मृच्छकटिकम्'।

प्रश्न 2 (आसान). 'मृच्छकटिकम्' को तत्कालीन समाज का क्या माना जाता है?
उत्तर – 'दर्पण'।

प्रश्न 3 (मध्यम). हमारे पाठ 'सौवर्णशकटिका' को 'मृच्छकटिकम्' के किस अंक से लिया गया है?
उत्तर – 'छठे अंक' से।

प्रश्न 4 (कठिन). 'मृच्छकटिकम्' में किन मुख्य सामाजिक बुराइयों का चित्रण किया गया है?
उत्तर – अराजकता, कुरीति, द्यूतव्यसन (जुआ), चैर्यवृत्ति (चोरी), और न्यायालय में पक्षपात।

» नाटक के पात्रों का परिचय और प्रसंग

प्रश्न 5 (आसान). रदनिका कौन है?
उत्तर – रदनिका चारुदत्त के घर की दासी है, जो रोहसेन का ख्याल रखती है।

प्रश्न 6 (आसान). रोहसेन क्यों रो रहा था?
उत्तर – रोहसेन पड़ोस के बच्चे की सोने की गाड़ी देखकर वैसी ही गाड़ी के लिए रो रहा था।

प्रश्न 7 (मध्यम). चारुदत्त का परिचय दीजिए।
उत्तर – चारुदत्त एक धनहीन ब्राह्मण सार्थवाह हैं, जो पहले धनी थे, लेकिन अपने दानशील स्वभाव के कारण अब निर्धन हैं। वह रोहसेन के पिता हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). वसन्तसेना का चरित्र चित्रण संक्षेप में कीजिए।
उत्तर – वसन्तसेना उज्जैन की एक प्रसिद्ध गणिका हैं, जो धनी और कला-प्रेमी होने के साथ-साथ एक दयालु और वात्सल्यमयी हृदय वाली स्त्री हैं। वह रोहसेन की मासूमियत पर मोहित होकर अपनी सारी संपत्ति (आभूषण) उसे खुशी देने के लिए दान कर देती हैं।

» रोहसेन की सोने की गाड़ी की इच्छा

प्रश्न 9 (आसान). रोहसेन ने किसके पास सोने की गाड़ी देखी?
उत्तर – अपने पड़ोसी के बच्चे के पास।

प्रश्न 10 (आसान). रदनिका ने रोहसेन को क्या देने की कोशिश की?
उत्तर – मिट्टी की गाड़ी (मृत्तिकाशकटिका)।

प्रश्न 11 (मध्यम). रोहसेन ने मिट्टी की गाड़ी के बारे में क्या कहा?
उत्तर – उसने कहा, 'किम्मम एतया मृत्तिकाशकटिकया?' यानी 'इस मिट्टी की गाड़ी से मेरा क्या काम?'।

प्रश्न 12 (कठिन). रोहसेन की सोने की गाड़ी की इच्छा से उसके स्वभाव की कौन सी विशेषता पता चलती है?
उत्तर – इससे उसके बालसुलभ और मासूम स्वभाव का पता चलता है, जो दूसरों की चीज़ों से आकर्षित होता है और अपनी इच्छा को भोलापन से व्यक्त करता है, बिना सामाजिक या आर्थिक परिस्थितियों को समझे।

» रदनिका और वसन्तसेना का मिलन

प्रश्न 13 (आसान). रदनिका रोहसेन को लेकर किसके पास जाती है?
उत्तर – वसन्तसेना के पास।

प्रश्न 14 (आसान). वसन्तसेना रदनिका से पहला प्रश्न क्या पूछती है?
उत्तर – कस्य पुनरयं दारकः? (यह बच्चा किसका है?)

प्रश्न 15 (मध्यम). वसन्तसेना रोहसेन के बिना अलंकरण वाले शरीर को देखकर भी क्यों प्रसन्न होती है?
उत्तर – वसन्तसेना रोहसेन के 'चन्द्रमुख' (चाँद जैसे मुख) की मासूमियत से प्रसन्न होती है, भले ही उसने कोई आभूषण न पहने हों।

प्रश्न 16 (कठिन). इस प्रसंग से वसन्तसेना के चरित्र की कौन सी विशेषताएँ उजागर होती हैं?
उत्तर – इस प्रसंग से वसन्तसेना की दयालुता, ममता, और सौंदर्य को केवल बाहरी अलंकरण में न देखकर मासूमियत में भी समझने की विशेषताएँ उजागर होती हैं।

» वसन्तसेना द्वारा रोहसेन का परिचय और स्नेह

प्रश्न 17 (आसान). वसन्तसेना ने रोहसेन को क्या कहकर अपने पास बुलाया?
उत्तर – 'एहि मे पुत्राक! आलिघ॰' कहकर।

प्रश्न 18 (आसान). रोहसेन को देखकर वसन्तसेना ने उसके रूप में किसकी समानता देखी?
उत्तर – उसके पिता चारुदत्त की।

प्रश्न 19 (मध्यम). वसन्तसेना के 'एहि मे पुत्राक! आलिघ॰' कहने से उसके किस भाव का पता चलता है?
उत्तर – इससे वसन्तसेना के रोहसेन के प्रति वात्सल्य और ममतापूर्ण स्नेह का भाव प्रकट होता है, जैसे वह उसकी अपनी माँ हो।

प्रश्न 20 (कठिन). रदनिका ने 'न वेफवलं रूपं, शीलमपि तर्कयामि' क्यों कहा? इससे क्या अर्थ निकलता है?
उत्तर – रदनिका ने यह इसलिए कहा क्योंकि उसने रोहसेन में न केवल उसके पिता चारुदत्त का रूप देखा, बल्कि उसके स्वभाव और व्यवहार में भी चारुदत्त की ही झलक महसूस की। इससे पता चलता है कि रोहसेन सिर्फ़ शारीरिक रूप से ही नहीं, बल्कि अपने गुणों में भी अपने पिता जैसा था।

» रोहसेन के रोने का कारण और वसन्तसेना की प्रतिक्रिया

प्रश्न 21 (आसान). रोहसेन किस प्रकार की शकटिका से खेलना चाहता था?
उत्तर – रोहसेन 'सौवर्णशकटिका' यानी सोने की गाड़ी से खेलना चाहता था।

प्रश्न 22 (आसान). रदनिका ने रोहसेन को कौन सी शकटिका दी थी?
उत्तर – रदनिका ने रोहसेन को 'मृत्तिकाशकटिका' यानी मिट्टी की गाड़ी दी थी।

प्रश्न 23 (मध्यम). वसन्तसेना ने 'हा धिक् हा धिक्!' क्यों कहा?
उत्तर – वसन्तसेना ने 'हा धिक् हा धिक्!' इसलिए कहा क्योंकि उसने देखा कि एक छोटा बच्चा भी दूसरों की संपत्ति (सोने की गाड़ी) देखकर दुखी हो रहा है, जो सामाजिक असमानता को दर्शाता है।

प्रश्न 24 (कठिन). वसन्तसेना ने मनुष्य के भाग्य की तुलना किससे की और क्यों?
उत्तर – वसन्तसेना ने मनुष्य के भाग्य की तुलना 'पुष्करपत्रापतित-जलबिन्दुसदृशैः' यानी कमल के पत्ते पर गिरी पानी की बूंदों से की। इसका अर्थ है कि भाग्य पानी की बूंदों की तरह चंचल और अस्थिर होता है, कभी स्थिर नहीं रहता, जैसे भगवान ही भाग्य से खेलते रहते हैं।

» वसन्तसेना की उदारता और वात्सल्य

प्रश्न 25 (आसान). रोहसेन को चुप कराने के लिए वसन्तसेना ने सबसे पहले क्या किया?
उत्तर – उसने अपने 'अश्रूणि प्रमृज्य' यानी आँसू पोंछकर कहा, 'जात! न रोदिष्यामि। गच्छ, क्रीड।'

प्रश्न 26 (आसान). वसन्तसेना ने बच्चे को क्या बनवाने के लिए अपने आभूषण दिए?
उत्तर – उसने 'सौवर्णशकटिका' यानी सोने की गाड़ी बनवाने के लिए अपने आभूषण दिए।

प्रश्न 27 (मध्यम). आप वसन्तसेना के इस कार्य को 'उदारता' क्यों कहेंगे? संक्षेप में समझाइए।
उत्तर – यह उदारता है क्योंकि उसने अपने बहुमूल्य 'आभरणानि' बिना किसी संकोच के एक ऐसे बच्चे को दे दिए, जिससे उसका कोई सीधा संबंध नहीं था, केवल उसके दुख को दूर करने के लिए।

प्रश्न 28 (कठिन). वसन्तसेना के 'वात्सल्य' को पाठ के किस अंश से सबसे अच्छी तरह समझा जा सकता है? व्याख्या कीजिए।
उत्तर – वसन्तसेना के 'वात्सल्य' को तब सबसे अच्छी तरह समझा जा सकता है जब वह बच्चे के रोने पर स्वयं 'अश्रूणि प्रमृज्य' अपने आँसू पोंछती है, और फिर उसे 'अलघड्ढारकम्' देकर सोने की गाड़ी बनवाने को कहती है। यह दर्शाता है कि उसने बच्चे के दुख को अपनी ही संतान का दुख माना और तुरंत उसे दूर करने के लिए अपनी सबसे कीमती चीज़ भी दे दी।

» अंतिम दृश्य और रोहसेन की स्वीकृति

प्रश्न 29 (आसान). रोहसेनः कं दृष्ट्वा रोदिति?
उत्तर – रोहसेनः प्रातिवेशिकस्य सौवर्णशकटिकां दृष्ट्वा रोदिति।

प्रश्न 30 (आसान). वसन्तसेना रोहसेनं कथं सान्त्वयति?
उत्तर – वसन्तसेना रोहसेनं आलिङ्य सान्त्वयति।

प्रश्न 31 (मध्यम). वसन्तसेना किं दत्त्वा रोहसेनं सौवर्णशकटिकां निर्मातुं प्रेरयति?
उत्तर – वसन्तसेना स्व आभरणानि दत्त्वा रोहसेनं सौवर्णशकटिकां निर्मातुं प्रेरयति।

प्रश्न 32 (कठिन). अंतिम दृश्ये रोहसेनस्य प्रतिक्रिया कीदृशी आसीत्?
उत्तर – अंतिम दृश्ये रोहसेनः प्रथमं संकोचति, परन्तु वसन्तसेनायाः प्रेम्णा आभरणानि स्वीकरोति, सौवर्णशकटिकां निर्मातुं च स्वीकृतिं ददाति।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. 'मृच्छकटिकम्' नाटक से हमें तत्कालीन समाज की किन विशेषताओं का पता चलता है?

› सबसे पहले, यह हमें बताता है कि उस समय 'अराजकता' यानी अव्यवस्था फैली हुई थी।
› दूसरा, समाज में 'कुरीतियां' यानी गलत परंपराएं थीं, जिन्हें बदलना ज़रूरी था।
› तीसरा, 'द्यूतव्यसन' और 'चैर्यवृत्ति' जैसी बुराइयाँ आम थीं, यानी लोग जुआ खेलते थे और चोरी भी होती थी।
› चौथा, 'न्यायालय में पक्षपात' होता था, मतलब कोर्ट में न्याय सबके लिए बराबर नहीं था।
› और पाँचवाँ, 'राजा के सगे-सम्बन्धियों का स्वैराचार' था, यानी राजा के लोग मनमानी करते थे।

उत्तर – 'मृच्छकटिकम्' नाटक से तत्कालीन समाज की अराजकता, कुरीति, द्यूतव्यसन, चैर्यवृत्ति, न्यायालय में पक्षपात और राजा के सगे-संबंधियों के स्वैराचार जैसी कई महत्वपूर्ण सामाजिक विशेषताओं का पता चलता है।

उदाहरण 2. नाटक में वसन्तसेना का रोहसेन के प्रति क्या भाव दिखाया गया है और क्यों?

› सबसे पहले पहचानो कि वसन्तसेना कौन है और रोहसेन कौन है। वसन्तसेना 'उज्जयिनी नगर की गणिका' है, और रोहसेन 'आर्य चारुदत्त' का बेटा है।

› अब देखो कि किताब में क्या लिखा है। लिखा है कि 'वात्सल्यमयी वसन्तसेना अपने सारे आभूषण बच्चे को सौंप देती है'। 'वात्सल्यमयी' शब्द का अर्थ है ममता से भरी हुई।

› यह भी देखो कि जब वसन्तसेना रोहसेन को देखती है, तो वह कहती है: 'अनलंङ्कृत- शरीरोऽपि चन्द्रमुख आनन्दयति मम हृदयं' – मतलब बिना गहनों के भी, इसका चंद्रमा जैसा मुख मेरे मन को आनंदित कर रहा है।

› रोहसेन के रोने का कारण सुनकर, 'हा ध्क् हा ध्क्! अयमपि नाम परसम्पत्त्या सन्तप्यते?' मतलब हाय रे, ये भी दूसरों

की संपत्ति देखकर दुखी हो रहा है? ये सुनकर वसन्तसेना भावुक हो जाती हैं और बच्चे को शांत करने के लिए अपने सारे आभूषण दे देती हैं।

› तो, इन सब बातों से साफ पता चलता है कि वसन्तसेना रोहसेन के प्रति 'वात्सल्य' या माँ जैसी ममता का भाव रखती है। वह बच्चे के भोलेपन और उसकी जिद से पिघल जाती है और उसे खुशी देना चाहती है, भले ही उसे अपने गहने देने पड़ें।

उत्तर – वसन्तसेना का रोहसेन के प्रति 'वात्सल्य' यानी माँ जैसी ममता का भाव दिखाया गया है। वह रोहसेन की मासूम जिद और दुख से प्रभावित होकर उसे खुश करने के लिए अपने सारे आभूषण दे देती है।

उदाहरण 3. रोहसेन ने अपनी दासी रदनिका से क्या मांगा और क्यों?

› पाठ्यांश के अनुसार, 'धनी मानी पड़ोसी बच्चे की सोने की गाड़ी देख' रोहसेन को वैसी ही गाड़ी की इच्छा हुई।

› उसने रदनिका से 'तामेव सौवर्णशकटिकां देहि' कहा, यानी 'वही सोने की गाड़ी दो'।

› यह इच्छा उसने पड़ोसी के बच्चे के पास सोने की गाड़ी देखने के बाद व्यक्त की।

उत्तर – रोहसेन ने अपनी दासी रदनिका से सोने की गाड़ी मांगी, क्योंकि उसने पड़ोसी के बच्चे के पास वैसी ही एक सोने की गाड़ी देखी थी और उसे भी वैसी ही गाड़ी से खेलने की इच्छा हुई।

उदाहरण 4. पाठ के अनुसार, वसन्तसेना रदनिका का स्वागत कैसे करती है और रोहसेन को देखकर क्या कहती है?

› रदनिका और रोहसेन को देखकर वसन्तसेना पहले 'रदनिके! स्वागतं ते' कहकर रदनिका का स्वागत करती है।

› फिर बच्चे को देखकर वो पूछती है 'कस्य पुनरयं दारकः' अर्थात् यह बच्चा किसका है?

› बच्चे के 'अनलंकृतशरीर' होने के बावजूद उसके 'चन्द्रमुख' से वसन्तसेना आनंदित होती है और कहती है 'आनन्दयति मम हृदयम्'।

› यह दिखाता है कि वसन्तसेना को बच्चे की मासूमियत और भोलापन बहुत पसंद आया।

उत्तर – वसन्तसेना रदनिका का 'स्वागतम्' कहकर स्वागत करती है और रोहसेन को देखकर पूछती है कि वह किसका बच्चा है, साथ ही यह भी कहती है कि उसका बिना गहनों वाला चाँद जैसा मुख उसके हृदय को आनंदित कर रहा है।

उदाहरण 5. पाठ के अनुसार वसन्तसेना ने रोहसेन के प्रति अपने किस भाव को व्यक्त किया और कैसे?

› पहला चरण: वसन्तसेना ने रोहसेन को देखते ही 'एहि मे पुत्राक! आलिघ' कहकर गले लगाया। इसका अर्थ है, 'आओ मेरे बेटे! मुझे गले लगाओ।'

› दूसरा चरण: उसने रोहसेन को अपना पुत्र मान लिया और उसके प्रति वात्सल्य भाव प्रकट किया।

› तीसरा चरण: वसन्तसेना ने यह भी कहा कि 'अनुकृतमनेन पितुः रूपम्।' यानी, 'इस बच्चे ने तो अपने पिता का रूप बिल्कुल वैसा ही पाया है।' यह रोहसेन और उसके पिता चारुदत्त के बीच समानता को दर्शाता है और वसन्तसेना का उनसे जुड़ाव दिखाता है।

उत्तर – वसन्तसेना ने रोहसेन को 'पुत्राक' कहकर गले लगाकर और उसमें उसके पिता चारुदत्त का रूप देखकर वात्सल्य और स्नेह का भाव व्यक्त किया।

उदाहरण 6. रोहसेन क्यों रो रहा था और वसन्तसेना ने उसकी बात सुनकर क्या महसूस किया?

› रदनिका बताती है कि रोहसेन एक पड़ोसी बच्चे की सोने की गाड़ी से खेला था।

› वह पड़ोसी बच्चा सोने की गाड़ी अपने साथ ले गया।

› रोहसेन को जब रदनिका ने मिट्टी की गाड़ी दी, तो उसने उसे लेने से मना कर दिया क्योंकि उसे सोने की ही गाड़ी चाहिए थी।

› यह सुनकर वसन्तसेना को बहुत दुख हुआ, उसे लगा कि यह बच्चा भी दूसरों की संपत्ति देखकर दुखी हो रहा है।

› वसन्तसेना को सामाजिक विषमता (गरीबी-अमीरी के फर्क) पर बहुत पीड़ा हुई और उसने कहा कि विधाता मनुष्यों के भाग्य से कमल-पत्र पर पानी की बूंदों की तरह खेलते हैं।

उत्तर – रोहसेन इसलिए रो रहा था क्योंकि उसे सोने की गाड़ी चाहिए थी जो पड़ोसी बच्चा ले गया था, और वह मिट्टी की गाड़ी से संतुष्ट नहीं था। वसन्तसेना को उसकी बात सुनकर केवल दया नहीं आई, बल्कि सामाजिक विषमता और अमीर-गरीब के फर्क को देखकर गहरी पीड़ा और व्यथा महसूस हुई।

उदाहरण 7. पाठ के आधार पर वसन्तसेना की उदारता और वात्सल्य को अपने शब्दों में समझाइए।

› पहला चरण: हमें समझना होगा कि रोहसेन क्यों रो रहा था – उसे मिट्टी की गाड़ी नहीं, सोने की गाड़ी चाहिए थी।

› दूसरा चरण: वसन्तसेना ने बच्चे का दुख देखा। उसने यह नहीं सोचा कि यह बच्चा मेरा नहीं है।

› तीसरा चरण: उसने अपने शरीर से अपने 'आभरणानि' यानी गहने उतारे और रोहसेन को दे दिए।

› चौथा चरण: उसने बच्चे से कहा कि इन गहनों से 'सौवर्णशकटिकां घटय' यानी सोने की गाड़ी बनवा लो।

› पाँचवाँ चरण: यह कार्य उसकी 'उदारता' को दिखाता है, क्योंकि उसने बिना किसी स्वार्थ के अपने कीमती आभूषण दे दिए।

› छठा चरण: बच्चे के दुख को अपना दुख समझना और उसे तुरंत दूर करने का प्रयास करना, यह 'वात्सल्य' यानी माँ जैसे प्रेम को दर्शाता है।

उत्तर – वसन्तसेना ने रोहसेन के सोने की गाड़ी के लिए रोते हुए देखकर, अपने शरीर के सारे आभूषण उतार कर उसे दे दिए ताकि वह उनसे सोने की गाड़ी बनवा सके। यह उसकी असीम उदारता और बच्चे के प्रति ममतापूर्ण वात्सल्य को दर्शाता है।

उदाहरण 8. प्रश्न: वसन्तसेना रोहसेनं 'जात! कारय सौवर्णशकटिकाम्' इत्युक्त्वा किं ददाति?

› यहाँ वसन्तसेना 'जात! कारय सौवर्णशकटिकाम्' (बेटे! सोने की गाड़ी बनवा लो) कहकर रोहसेन को कुछ देती है। हमें यह समझना है कि वह क्या चीज़ देती है।

› पाठ में स्पष्ट है कि जब रोहसेन रो रहा होता है, तो वसन्तसेना अपने 'आभरणानि' (गहने) उतारकर उसे देती है।

› वह कहती है, 'आभरणानि घटय' (इन गहनों से बनवा लो)।

› अतः, वह अपने आभूषण (गहने) देती है।

उत्तर – वसन्तसेना रोहसेनं 'जात! कारय सौवर्णशकटिकाम्' इत्युक्त्वा स्व 'आभरणानि' (गहने) ददाति।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• बोर्ड परीक्षा में 'मृच्छकटिकम्' के सामाजिक संदर्भ और इसके मुख्य पात्रों पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं, इसलिए इन बिंदुओं को ध्यान से समझना बहुत ज़रूरी है।

• पात्रों के नाम और उनके रिश्ते याद रखना। बोर्ड परीक्षा में इनके चरित्र-चित्रण पर प्रश्न आते हैं, खासकर वसन्तसेना और चारुदत्त के।

• यह अंश वसन्तसेना के स्वभाव और उसकी चारित्रिक विशेषताओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, अक्सर इस पर आधारित प्रश्न आते हैं।

• इस पाठ में वसन्तसेना का चरित्र चित्रण बहुत महत्वपूर्ण है। उसके ममतापूर्ण स्वभाव के साथ-साथ उसकी सामाजिक चेतना पर आधारित प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं, इसलिए उसके इस पक्ष को अच्छे से समझना।

एक नज़र में रिवीज़न

› शूद्रक का 'मृच्छकटिकम्' - तत्कालीन समाज का दर्पण, छठे अंक से 'सौवर्णशकटिका'।

› पात्र: रदनिका (दासी), रोहसेन (पुत्र), चारुदत्त (पिता), वसन्तसेना (गणिका); प्रसंग: सोने की गाड़ी की जिद।

› रदनिका रोहसेन संग वसन्तसेना के पास, स्वागत व बच्चे पर प्रश्न।

› रोहसेन को सोने की गाड़ी चाहिए थी, वसन्तसेना को सामाजिक असमानता पर पीड़ा हुई।